.05.2020

Date
Page

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
B.A part. 1 paper 11
Topic - Ambedkar, Indian political thought
Lecture- 41

भीमराव रामजी अम्बेडकर (1891-1956)

विद्या के धनी, अद्भुत प्रतिभा, निर्भीकवादी तथा स्पष्टवादिता के धनी भीमराव जीवन भर दलितों के लिए संघर्ष करते रहे। दलितों के वे मसीहा थे।

इन्दौर के समीप महू छावनी में 14 अप्रैल, 1891 को एक पिछड़ी जाति 'महार' परिवार में भीमराव अम्बेडकर का जन्म हुआ था। महार जाति अछूत जाति थी। सतारा से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने बम्बई के एल्फिन्स्टन कॉलेज में प्रवेश लिया। उन्हें 'गायकवाड़ छात्रवृत्ति' प्राप्त हुई जिसकी मदद से कॉलेज की शिक्षा प्राप्त की और बाद में अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। वे प्रथम भारतीय अछूत और महार थे, जो पढ़ने के लिए विदेश गये थे। अमेरिका में उन्होंने अर्थशास्त्र में एम०ए० किया। इसके पश्चात 1916 में अम्बेडकर ने विश्व के प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान 'लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स एण्ड पोलिटिकल साइन्स' में अध्ययन किया। तत्पश्चात उन्होंने लन्दन विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। शोध का विषय 'The problem of the Rupee' था।

स्वदेश आने के बाद उन्होंने वकालत प्रारम्भ की और अछूतों के लिए भी संघर्ष प्रारम्भ कर दिया। 1930 में 'अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ' के अध्यक्ष बने तथा 1936 में 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' की स्थापना की जिसका आगे चलकर

'अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ' के अध्यक्ष बने तथा 1936 में नाम रखा। उन्हें संविधान सभा में 'संविधान प्रारूप समिति' के अध्यक्ष का महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया और इस पद पर रहते हुए संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

अम्बेडकर के विचारों को प्रभावित करने में रामायण और महाभारत ग्रन्थ का विशेष महत्व है। गौतम बुद्ध, कबीर और ज्योतिबफुले उनके आदर्श थे।

उन्होंने कुछ पुस्तकें भी लिखी। मुख्य पुस्तकों के नाम हैं - Who are shudra? The untouchables, who are They? Pakistan or partition of India, States and minoorities, Annihilation of caste etc.

धर्म के प्रति दृष्टिकोण

डॉ० आम्बेडकर धार्मिक प्रचारक नहीं थे, वे राजनीतिक तथा सामाजिक नेता थे। लेकिन वे व्यक्ति के जीवन में धर्म के प्रभाव से भलीभाँति परिचित थे, अतः उन्होंने धर्म का दलितोद्धार के साधन के रूप में उपयोग किया। उनके अनुसार धर्म व्यक्ति के लिए है, व्यक्ति धर्म के लिए नहीं। धर्म व्यक्तियों के बीच भेदभाव नहीं करता और जो धर्म ऐसा करता है वह धर्म नहीं बल्कि मानवता का अपमान है। डॉ० अम्बेडकर देश में प्रचलित धार्मिक स्थिति से सन्तुष्ट नहीं थे जहाँ धर्म के नाम पर अछूतों के साथ भेदभाव किया जाता है। अतः उन्होंने हिन्दु धर्म की आलोचना की। वे मानवमात्र के प्रति समानता के

के सन्देशवाहक धर्म की खोज में थे। इस दृष्टि से ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म और सिख धर्म उन्हें अपूर्ण लगे। इसलिए वे बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित हुए और आगे चलकर अपने समर्थकों के साथ 1956 में बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। बौद्ध धर्म के प्रति आकर्षित होने के कारण निम्न थे - प्रथम, बौद्ध धर्म ज्ञान नीतिकता पर आधारित है, द्वितीय उसमें समानता है, और तृतीय, बौद्ध धर्म तर्क पर आधारित है। इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय यह है कि हिन्दू धर्म के प्रति विरोध भावना और बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लेने पर भी डॉ० अम्बेडकर का दृष्टिकोण धर्मनिरपेक्षवादी ही बना रहा।

दलितोद्धार विचार

डॉ० अम्बेडकर के विचारों का केन्द्रबिन्दु दलितोद्धार था। विदेशी विद्या प्राप्त और अध्ययन-अध्यापन के प्रति लगाव रखने वाले डॉ० अम्बेडकर को केवल दलितोद्धार की भावना राजनीति में ले आयी। बचपन से अछूत जाति में जन्म लेने के कारण उन्हें पग-पग पर अपमान तथा भारी यन्त्रणा का सामना करना पड़ा। यन्त्रणा की इन स्थितियों के फलस्वरूप उन्होंने दलितोद्धार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और सम्पूर्ण जीवन इसके लिए संघर्ष करते रहे। इस विद्या में उनके विचारों और कार्यों के अध्ययन का विवरण इस प्रकार है,

(1) जाति-प्रथा और हिन्दू समाज के नियम -

वैसे तो डॉ० अम्बेडकर के पूर्व समाज-सुधारक, दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, महात्मा गांधी आदि ने दलितोद्धार के लिए प्रयास किये हैं, किन्तु अम्बेडकर के समान जाति-प्रथा

और हिन्दू-समाज के विधान पर कठोर प्रहार किसी ने नहीं किया। उन्होंने प्रचलित वर्ण-व्यवस्था तथा जाति-व्यवस्था की आलोचना की और कहा कि इसी व्यवस्था पर आधारित सामाजिक ढाँचे की हिन्दू योजना ने जाति-व्यवस्था और छुआछूत को जन्म दिया। उन्होंने इस अमानवीय असमानता को दूर करने के क्रान्तिकारी सामाजिक हल की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके लिए वे जीवन भर प्रयत्नशील रहे। इस जाति-व्यवस्था को समाप्त करने के लिए अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया।

डॉ० अम्बेडकर 'मनुस्मृति' को अन्याय की जड़ मानते थे। अतः अपने आक्रोश को व्यक्त करने के लिए अनेक बार 'मनुस्मृति' को जलाने का कार्य किया। इस प्रकार भारत में प्रचलित जाति-प्रथा की भूल को वे समाप्त करना चाहते थे।

2- अछूतों के जीवन में सुधार के समर्थक -

डॉ० अम्बेडकर यह भलीभांति जानते थे कि अछूतों की वर्तमान स्थिति के लिए वे स्वयं ही उत्तरदायी हैं। अतः उन्होंने अछूतों द्वारा अपनी बुरी बातों आदतों और हीनता की भावना का त्याग कर आत्मसम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने को कहा। उन्होंने कहा कि अछूत संगठित हों, शिक्षित हों तथा अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करें। इस सम्बन्ध में डॉ० अम्बेडकर ने दलित हितों को सुझाव दिया कि वे पढ़ें और अपने बच्चों को स्कूल भेजकर शिक्षित करें। ऐसा करने से ही दलित

वर्ग अपना विकास कर समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त कर सकता है। उनके इस दिशा में प्रयास कुछ हद तक सफल भी हुए।

3. दलितों की स्थिति में सुधार के कानूनी उपाय -

डॉ० अम्बेडकर ने दलितों की स्थिति सुधारने के लिए कानूनों में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया। परम्परागत कानूनों में समयानुकूल परिवर्तन आवश्यक है। संविधान में दलित वर्गों को न केवल समानता के अधिकार दिये गये हैं, बल्कि कुछ विशेष प्रकार के संरक्षण भी प्रदान किए गए हैं। उन्होंने दलित वर्ग के सदस्यों के विकास के लिए अग्र सिफारिशें की थीं:

(i) दलित छात्रों के वजीफों की संख्या बढ़ायी जाय;
(ii) छात्रावास की व्यवस्था की जाय;
(iii) प्रशिक्षण के लिए वजीफे दिये जाये;
(iv) विदेश में इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए वजीफा दिया जाय।

4. डॉ० अम्बेडकर ने अपने समय में मन्दिर, कुएँ तथा तालाब आदि सार्वजनिक स्थानों पर प्रायः दलित वर्गों के निषेध का विरोध किया। ऐसा करना दलितों के साथ अन्याय करना है। इसके लिए उन्होंने सत्याग्रह भी किया। सत्याग्रह का उद्देश्य समाज के लोगों में दलितों के प्रति व्यवहार में परिवर्तन लाना है। उनके इस दिशा में किये गये प्रयासों में सफलता भी मिली।

5. ब्रिटिश शासनकाल में मुसलमानों, ईसाइयों और सिखों को साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व

प्राप्त था, उसी प्रकार दलितों को भी साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व मिलने का डॉ० अम्बेडकर ने समर्थन किया।

6. दलितों के प्रति होने वाले अत्याचार और अपमान को समाप्त करने के लिए डॉ० अम्बेडकर ने दलितों के धर्म-परिवर्तन की बात सोची। उनके मतानुसार दलित जब तक हिन्दू है, तब तक उनके साथ सम्मानपूर्ण जीवन बिता पाना सम्भव नहीं है अतः 1956 में बड़ी संख्या में दलितों के साथ उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया। दलितों के प्रति उनके द्वारा किये गये कार्यों के कारण वे दलितों के मसीहा बन गये। डॉ० वी० पी० वर्मा ने अम्बेडकर के व्यक्तित्व और कार्यों की तुलना अमेरिका के महान नीग्रो नेता पाल रोबसन से की है, जिसने अमेरिका के श्वेत बहुमत के विरुद्ध समस्त नीग्रो जाति के आक्रोश को व्यक्त किया।

— अतः विद्या के धनी अम्बेडकर केवल देशभक्त ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक थे। वे उदारवादी व्यक्ति थे और उनकी आस्था उदारवादी विचारधारा में थी। अम्बेडकर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के समर्थक थे। संसदीय प्रणाली के वे पक्षधर हैं। भारत के संविधान निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे मानवतावादी एवं उदारवादी होते हुए भी उनके विचारों के केन्द्रबिन्दु भारत में प्रचलित दलितों का उत्थान करना ही था।